और चौदहवें में इस्लाम-मत की समीक्षा की गई 'संस्कार विधि' में मानव निर्माण की योजना को विधिवत् कार्यान्वित करने के सूत्र उन्होंने प्रस्तुत किए है। उनका एक ही लक्ष्य था-कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाना। श्रेष्ठता का बीजारोपण कैसे किया जाए इसी की विधि उन्होंने संस्कार विधि में बताई है। इस ग्रन्थ में विवेचित सोलह संस्कारों द्वारा ही व्यक्ति अपने जीवन का संवार्ग्रीण विकास कर सकता है। 'आर्यभिविनय' ग्रन्थ में उन्होंने जिन वेद मन्त्रों को लेकर प्रार्थनाएं की है, वे उपने आप में अद्‌भुत एवं अनुपम है। इन प्रार्थनाओं में स्वराज्य प्राप्ति की प्रार्थनाएं तो है ही मगर साथ ही विदेशी सरकार के प्रति खुले रू‌प में विद्रोह की भावना भी अभिव्यक्त हुई है। 'गोकरूणा-निधि' ग्रन्थ में गाय की महता पर प्रकाश डाला गया है तथा कटती हुई गौ-माता की पुकार है। इस सम्बन्ध में महर्षि जी इतने जागरूक थे कि उन्होने तत्कालीन सरकार को गौ-हत्या बन्दी का आग्रह किया था। 'व्यवहारभानु' में शिष्टाचार, लोगों को आपस में किस प्रकार धर्मानुसार व्यवहार करना चाहिए इन समस्त बातों को रोचक दृष्टान्तों के माध्यम से बताया गया है। 'आर्योद्‌देश्यरत्नमाला' में आर्यसमाज की मान्यताओं की एक सौ परिभाषएं है। सूत्र रू‌प में अनुपम परिभाषएं लिखकर महर्षि जी ने मानों गागर में सागर ही भर दिया। है। 'पंच महायज्ञविधि' में ब्रह्म-यज्ञ, देव-यज्ञ, अतिथि-यज्ञ और बलिवैश्वदेव-यज्ञ करने का विधान एवं विधि बताई गई है। भले ही महर्षि जी अपने जीवन काल में ऋग्वेद के कुछ भाग तथा यजुर्वेद का ही भाष्य कर पाए हों मगर वेदार्थ-बोध के लिए 'ऋग्वेददि भाष्य भूमिका' के रूप में एक अनुपम ग्रन्थ दे गए है। उन्होंने सटीक प्रमाणों से यह बात संसार के सामने रखी कि वेद ज्ञान परमात्मा के द्वार दिया गया निर्भ्रान्त एवं सृष्टि नियमानुकूल सार्वभौमिक ज्ञान है तथा यही मानव मात्र के लिए अन्तिम